तक्षशिला

समकालीन साहित्य और दलित विमर्श

प्रो. संजय एल. मादार

Visit us at www.taxshilabooks.in

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक व लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलैक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरूत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

© सुरक्षित

I.S.B.N. : 978-81-7965-281-7

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : ₹990/-

प्रकाशक :
टी.एस. बिष्ट
तक्षशिला प्रकाशन
98-ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज
नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 011-43528469, 23258802
टेलीफैक्स : 011-23258802
ई-मेल : info@taxshilabooks.in, taxshilabooks@gmail.com

मुद्रक :
बालाजी ऑफसेट
दिल्ली-110032

Samkaleen Sahitya aur Dalit Vimarsha

By : Sanjay L. Madar

9. 'शिकंजे का दर्द' और दलित स्त्री 82
डॉ. स्नेहलता नेगी
10. आदिवासी चिंतन परंपरा और भारत की पहली आदिवासी स्त्री कथाकार 86
डॉ. स्नेहलता नेगी
11. वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी की प्रमुख कहानियों में आदिवासी जीवन का परिदृश्य 94
प्रो. एस. के. पवार
12. हिंदी कविताओं में आदिवासी विमर्श 101
डॉ. इसपाक अली
13. आदिवासी नारी-संघर्ष 'वनतरी' के पन्नों से 113
डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी
14. आदिवासी और धूणी तपे तीर 120
डॉ. शिव प्रसाद शुक्ल
15. 'वनतरी' उपन्यास में सामाजिक स्तर पर आदिवासी नारी संघर्ष 129
मुमताज बी. एम.
16. दोहरा संघर्षः समकालीन दलित स्त्री की कविता 132
डॉ. सुमा टी. रोडन्नवर
17. दलित कविताओं में अभिव्यक्त अपमान और तिरस्कार की भावना 143
डॉ. चंद्रशेखर लमाणी
18. हिंदी दलित कविता में अंबेडकरवादी विचार 148
डॉ. सविता थुडकेवार

13

आदिवासी नारी-संघर्ष 'वनतरी' के पन्नों से

डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी

आदिवासी जीवन पर आधारित उड़िया और बंगला में कथाओं की बहुलता है किंतु हिंदी में आदिवासी जीवन को केंद्र में रखकर कथाओं का सृजन बहुत कम ही हुआ है। यह बात अलग है कि हिंदी में आदिवासी उपन्यास कम ही लिखे गये हैं, जो हिंदी में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं इनमें **राजेन्द्र अवस्थी** का 'सूरज किरण की छाँव', 'जाने कितनी आँखें', और 'जंगल के फूल', **शिवप्रसाद सिंह** का 'शैलूष', **सजीव** का 'धार', 'जंगल जहाँ शुरु होता है', 'सावधान नीचे आग है', एवं पाँव तले की दूब', **रांगेय राघव** का 'कब तक पुकारूँ', **शानी** का 'साँप और सीढ़ी' तथा 'शालवनों का द्वीप', **वीरेन्द्र जैन** का 'डूब' और 'पार', **मैत्रेयी पुष्पा** का 'अल्मा कबूतरी' **सतीश दूबे** का 'कुराँटी', **श्रीप्रकाश मिश्र** का 'जहाँ बाँस फूलते हैं', **भगवानदास मोरवाल** का 'काला पहाड़', **मणि मधुकर** का 'पिजड़े में पन्ना', **हिमाशु जोशी** का 'सु-राज', 'अरण्य' और 'महासागर', **मंगल सिंह मुंडा** का 'छेल संदु', **दामोदर सदन** का 'नदी के मोड़ पर', **हबीब कैथी** का 'गमना', चंद्रमोन प्रधान का 'एकलव्य', **रणेन्द्र** का 'ग्लोबल गाँव के देवता', **पुन्नी सिंह** का 'सहराना', **बटरोही** का 'महर ठाकुरों का गाँव', **डॉ. एन. रामन नायर** का 'सागर की गलियाँ', **सुरेशचंद्र श्रीवास्तव** का 'वनतरी', **मिसेज एंडरसन** का हिंदुस्तान वापसी', **'राजीव रंजन प्रसाद** का 'आमचो बस्तर', **महुआ माझी** का 'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ', **उदयशंकर भट्ट** का 'सागर, लहरें और मनुष्य', **श्याम बिहारी श्यामल** का 'भपेल', **योगेन्द्र सिन्हा** का 'वनलक्ष्मी; और 'वन के मन में', **विनोद कुमार** का 'चक्रव्यूह', **राकेश वत्स** का 'जंगल के आस-पास', **रामदीन पांडेय** का 'इसी तरह चलता